उपसंहार

उपसंहार

साहित्यकार आदरणीय गोविन्द मिश्र जी के साहित्य को पढ़ने के बाद मैं अत्यंत प्रभावित हुई। उनके साहित्य में से 'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास मुझे सभी दृष्टि से सराहनीय लगा। इसलिए इस उपन्यास पर लघु शोध-प्रबंध लिखने की इच्छा हुई। मेरे शोध-प्रबंध का विषय है ''गोविन्द मिश्र के 'पाँच आँगनों वाला घर' का अनुशीलन''। यह उपन्यास हमारे समाज की संस्कृति, सभ्यता, राजनीति और पारिवारिकता को उद्घाटित करता है। मिश्र जी आधुनिक साहित्य जगत् की जानी मानी हस्ती है। उनके साहित्य में वास्तविकता के साथ-साथ आधुनिकता, यथार्थता और चित्रात्मकता दिखायी देती है। अपने जीवन काल में अत्यंत व्यस्त होने के बावजूद भी, एक बहुत बड़े पदाधिकारी की जिम्मेदारी निभाते हुए आपने साहित्य का निर्माण किया है। मिश्र जी के व्यक्तित्व में संवेदनशीलता, जीवन में व्यावहारिकता, साहित्य में प्रतिभा, समाज में सामाजिकता और वैवाहिक जीवन में साहचर्यता आदि बातों का मिश्रण दिखायी देता है। मिश्र जी का व्यक्तित्व सर्वगुण संपन्न व्यक्तित्व है। मिश्र जी ने 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में मनुष्य जीवन की रोजमर्रा की पारिवारिक त्रासदी को चित्रित किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध लिखने से पहले मेरे मन में जो प्रश्न उठे थे उनका समाधान उपसंहार में देने का प्रयास किया है। इस लघु शोध-प्रबंध के निर्मिती के पूर्व मिश्र जी से पत्र व्यवहार कर, मैंने अपने प्रश्नों को हल किया है जिससे मुझे समाधान मिला और इस लघु शोध-प्रबंध के लिए यह बातें अत्यंत उपयोगि सिद्ध हुअी है। मिश्र जी ने अपने लेखन में सदैव जुटे रहने के बावजूद और अत्यंत व्यस्त होते हुए भी मेरे हर पत्र का उत्तर विना विलंब दिया है, जिसकी प्रामाणिक जानकारी इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति के लिए उपयोगी सिद्ध हुअी है।

मेरे लघु शोध-प्रबंध का विषय है ''गोविन्द मिश्र के 'पाँच आँगनों वाला घर' का अनुशीलन''। इस लघु शोध-प्रबंध के लिए मैंने पाँच अध्यायों में इस उपन्यास का विवरण दिया है, जिसमें से प्रमुख है गोविन्द मिश्र जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, दूसरे अध्याय में 'पाँच आँगनों वाला घर' का वस्तुगत अनुशीलन, तीसरे अध्याय में कथ्यगत

अनुशीलन, चौथे अध्याय में शिल्पगत अनुशीलन और पाँचवे अध्याय में उपन्यास की समस्या को चित्रित किया है। इसमें मैंने अनेक उपलब्ध समीक्षा ग्रंथों का आधार लेकर उनकी प्रामाणिक जीवनी को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। गोविन्द मिश्र जी के व्यक्तित्व को अत्यंत नजदिकी से जानने के लिए उनसे किए गए पत्र व्यवहार से उनके जीवन की सच्चाई का एहसास हुआ है। मेरे कुछ प्रश्नों को मिश्र जी ने अत्यंत सहजता से सुलझाया है। मेरे हर प्रश्न का उत्तर उन्होंने अंत:करणपूर्वक देकर एक अनोखा सा रिश्ता बना दिया है। लेखक और पाठक से लेकर एक शोध छात्रा का लेखक से पत्र व्यवहार और उनसे प्राप्त जानकारी से आपके सच्चे मन में झाँकने का मौका मिला। जीवन भर मुझे यह बात स्मरण में रहेगी कि मिश्र जी ने मेरे प्रश्नों के पाठक से लेकर एक शोध-छात्रा का लेखक से पत्र व्यवहार और उनसे प्राप्त जानकारी से आपके सच्चे मन में झाँकने का मौका मिला। जीवन भर मुझे यह बात स्मरण में रहेगी कि मिश्र जी ने मेरे प्रश्नों के प्रति जो आस्था दिखायी है और अत्यंत प्रामाणिकता से सत्य को उद्‌घाटित किया है इससे मिश्र जी के साथ मन का और उनके मन में आनेवाले उच्च्च विचारों का एक गहरा रिश्ता-सा बन गया है, जिसे शायद ही मैं कभी भूल पाऊँ!

मेरे इस लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक प्रश्नों का समाधान मुझे मिश्र जी से मिला। पत्र व्यवहार द्‌वारा उनका साक्षात्कार ही लिया गया हो। 'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास लिखने की प्रेरणा आपको एम.ए. के सहपाठी मित्र से मिली है। अपने पत्र में आपने पाँच आँगनों वाला घर के बड़प्पन को बताया है। महावीर महाविद्‌यालय, कोल्हापुर में आपसे ही एक बात मैंने सुनी थी कि 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के कौन से पात्र के साथ स्वयं को जोड़ते है? ऐसा प्रश्न उठाया गया था तो आपने बताया कि पात्र से अधिक पाँच आँगनों वाले घर के सामने बड़ बाबा के पेड़ के साथ स्वयं को जोड़ते हैं। वह पेड़ जो उस परिवार का साक्षी है, जो इस परिवार की सभी पीढ़ियों को देख चुका है। परिवार के विघटन को और पीढ़ी की दूरावस्था को देखने वाला है बड़ बाबा का पेड़ ! मिश्र जी बड़ बाबा के पेड़ की तरह सब कुछ देखते गए और उसकी अनुभूति लेते हुए तकरीबन पाँच पीढ़ियों कि ऐतिहासिक गाथा सुनाते गए।

मिश्र जी ने अपने पत्र में यह भी बात कही है कि मित्र से सुनी पारिवारिक कथा की त्रासदी को उन्होंने कल्पना में बाँधकर चित्रित करना चाहा है। उपन्यास 1940 से लेकर 1990 तक की भारतीय परिवार की ऐतिहासिक त्रासदी को बताता है किंतु इसमें एक जगह पर 40 वर्ष का अंतराल दिखायी देता है। उसका कारण पूछने से आपने यह उत्तर दिया है कि शायद इस समय में लिखने लायक कुछ घटित नहीं हुआ हो ! किंतु पाठक को यह बात समझ लेनी चाहिए कि, जहाँ कुछ घटित नहीं होता वहाँ कुछ बात नहीं होती जिसे लिखने की आवश्यकता भी नहीं होती है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस तरह का शीर्षक देने का क्या कारण है? संयुक्त परिवार और उनके साथ उनसे जुड़े हुए मूल्यों का विघटन कैसे हुआ है? इस प्रकार मिश्र जी ने मेरे सभी प्रश्नों को हल किया है और समय-समय पर पत्रों के उत्तर देकर मेरी मदद की है जिससे मैं इस लघु शोध-प्रबंध को और भी अधिक प्रामाणिक और रोचक बना पायी हूँ। मिश्र जी ने स्व.डॉ. प्रेमशंकर जी लिखित उपन्यास पर की हुई समीक्षा के कुछ लेख भेजे जिसका उपयोग मुझे इस लघु शोध-प्रबंध के लिए हुआ है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में मैंने मिश्र जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया है। इससे मैंने मिश्र जी के जीवनी को प्रामाणिकता से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मिश्र जी के व्यक्तित्व को जानने के लिए डॉ. उर्मिला शिरीष से सम्पादित सृजनयात्रा 'सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र' यह ग्रंथ अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। मिश्र जी की जीवनी पर प्रकाश डालने के लिए मुझे कई समीक्षक ग्रंथों का आधार मिला। उसीसे मैंने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन किया है। मिश्र जी का जन्म 1 अगस्त 1939 को अंतर्रा के बांदा (जिला) उत्तरप्रदेश में, ब्राह्मण जाती में हुआ। मैंने मिश्र जी से जाती संबंधी उनकी धारणा के बारे में जानना चाहा तो आपने यह प्रत्युत्तर दिया, 'जन्मना जन्मते शूद्रः कर्मणा ब्राह्मणे इति उच्चते:' आपके इस विचार से उदात्त मन का परिचय हुआ। आपका मानना ऐसा है कि हर व्यक्ति जन्म से शूद्र पैदा होता है, कर्मों से ब्राह्मण बनता है। जाती को लेकर किसी के बारे में कोई धारणा बना लेना गलत है। मिश्र जी के इस विचारों से मेरा मन उनके प्रति सस्नेह भाव से आत्मीयता से उभर आया।

मिश्र जी पर सुसंस्कृत माता-पिता के संस्कारों की सौगात थी। मिश्र जी का बचपन एक ऐसे क्षेत्र में गुजरा जहाँ का इलाका बहुत ही पीछड़ा इलाका था जो धान, धूल, धौंस, धक्का के लिए प्रसिद्ध था। अख्खड़पन और कर्कशता के लिए कुविख्यात था। मिश्र जी के घर में शिक्षा का वातावरण था किंतु जीवन जीते समय उन्हें अभाव में जीवन जीना पड़ा। उनकी माता सुमित्रादेवी को उस जमाने में अध्यापक बनकर रहते हुए कई सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। मिश्र जी के पिताजी शिक्षित तो थे किंतु मंगौड़े की दुकान चलाते थे। उस जमाने में आमदनी की कमी के कारण पारिवारिक अवस्था अत्यंत दारूण रहती थी। अपने जीवन काल में मिश्र जी ने कई समस्याओं का सामना किया है।

मिश्र जी ने जैसे ही किशोरावस्था में कदम रखा तभी से उन्होंने जीवन को जाना है। जीवन के हर राग रंग को वे पहचान गए हैं। 14 वर्ष की आयु में पहले प्रेम की असफलता ने उन्हें अत्यंत संवेदनशील बना दिया। उस टूटे हुए दिल ने साहित्य में पहला कदम रखा। 14 साल की आयु में ही उन्होंने अपनी पहली कहानी का निर्माण किया है। पहले प्रेम के मोहभंग ने उन्हें लिखवाया। फिर भी जीवन चलता रहा। इस संबंध में मैंने आपसे एक प्रश्न किया कि प्रेम में असफल होने के बाद शेष जीवन जीते समय मनुष्य की प्रेम के प्रति क्या धारणा होती है? इस पर अपने मौलिक विचारों को प्रकट किया - ''यह व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर होता है। कुछ प्रेम से आजीवन परहेज रखने का सोचने लगते हैं, कुछ पुराने प्रेम के दर्द को तत्काल नये प्रेम से लेप डालना चाहते हैं, कुछ आत्महत्या तक कर लेते हैं। मैंने दर्द को सहा, फिर उसे अपने भीतर आनंद से बिठाया। उसने मुझे साहित्य में लगाया। उसके बाद जीवन चल पड़ा।'' सचमुच मिश्र जी के यह विचार हमें जीवन से लड़ने के लिए और समस्याओं का समाधान ढूँढने के लिए सलाह देते हैं। मन की विडंबना को मुक्त करना ही साहित्य को जन्म देना है। मिश्र जी स्वयं इस बात को मानते हैं। वे कहते हैं - ''जीवन अर्थपूर्ण लगता है तभी जब मैं लिख रहा होता हूँ वर्ना कितना निरर्थक। हर रचना के बाद मैं बिल्कुल वही नहीं रहता जो उस रचना के पहले था। भीतर कुछ हो चुका होता है, इस बीच! एक रचना आगे आने वाली कई रचनाओं की भूमिका बनती है। लिखने से ही लिखते रहने का क्रम बन जाता है। पहले प्रेम की असफलता ने संवेदनशील

मिश्र जी के हाथों न जाने कितनी मौलिक साहित्य कृतियों का निर्माण किया है।'' आपने अपने जीवन काल में उच्च पदाधिकारी का कर्तव्य निभाया है। अपने पद के कारण व्यस्त रहनेवाले मिश्र जी ने अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए साहित्य का निर्माण किया है। हिन्दी साहित्य जगत् में अपनी अलग सी छबी रखनेवाले मिश्र जी का साहित्य सराहनीय है। मिश्र जी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया है।

मिश्र जी सच्चे साहित्यकार, कवि, पदाधिकारी, अध्यापक और अपने परिवार के प्रति आस्था रखनेवाले तथा समाज की पोल खोलनेवाले प्रतिभा संपन्न और सच्चे प्रेमी तथा देश के सचेत नागरिक है।

द्वितीय अध्याय में मैंने पाँच आँगनों वाला घर इस उपन्यास का वस्तुगत अनुशीलन किया है। वस्तुगत अनुशीलन करने का उद्देश्य यह है कि इस उपन्यास के कथानक पर प्रकाश डालना। उपन्यास की कथावस्तु को उजागर करना। कथावस्तु का स्थान रीढ़ की हड्डी की तरह होता है। उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन करना और उपन्यास की कथावस्तु को विस्तार के साथ प्रस्तुत करना चाहा है।

कथावस्तु उपन्यास में आत्मा के समान होती है। इसलिए उपन्यास में कथावस्तु को प्रथम स्थान दिया है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में मिश्र जी ने संयुक्त परिवार के विघटन को दिखाया है। 1940 से लेकर 1990 तक के भारतीय समाज में स्थित एक सामंति परिवार की त्रासदी को मिश्र जी ने चित्रित किया है। पारिवारिक विघटन के साथ भारतीय समाज की बदलती पीढ़ी के साथ बदलनेवाली मानसिक स्थिति का अंकन इसमें हुआ है। इस अध्याय में मैंने पाँच आँगनों वाला घर के कथानक को प्रस्तुत करना चाहा है।

उपन्यास की शुरूआत सन्नी की सारंगी से होती है। जिसमें मिश्र जी प्राकृतिक और आँचलिक वर्णन करते हुए दिखायी देते हैं। प्राकृतिक वर्णन में कार्तिकी स्नान के लिए जानेवाले लोग, राजन और नदी का वर्णन किया हुआ है। राजन की दादी अम्मा जोगेश्वरी का लिबास और उनके पीछे-पीछे दौड़ने वाला राजन इस तरह का वर्णन किया है। जो वास्तविक भी है और रोचक भी है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में दादी माँ,

जोगेश्वरी, राधेलाल, राजन और राजन के बेटे छोटू, बंटू आदि तक की करीब पाँच पीढ़ियों की जीवन गाथा का चित्रण है। यह इस उपन्यास के कथानक को निर्माण करने वाले महत्वपूर्ण पात्र हैं, इससे जुड़े हुए पात्रों में सन्नी मोहन, घनश्याम, बाँके, शांती, रम्मो, ओमि, नइकी, श्याम, छोटे, गोवर्द्धन, कमलाबाई, रामधन, हैडमास्टर स्मिथ आदि पात्रों का समावेश है। अलग-अलग पात्रों की जीवनीयों का उल्लेख किया है और उपन्यास की कथावस्तु में पारिवारिक ऐतिहासिकता को दिखाया है।

जोगेश्वरी के बड़े बेटे राधेलाल घर की जिम्मेदारी को निभाने वाले, घर के मुखिया है और प्रमुख सदस्य होने के कारण घर की आर्थिक और पारिवारिक स्थिति को स्थिर बनाकर रखते हैं जिससे संयुक्त परिवार एकजूट बनकर रहता है। संयुक्त परिवार की नींव को मजबूत बनाने के लिए जोगेश्वरी राधेलाल का आसरा लेती है। चचेरे भाईयों सहित घर में हर-रोज सौ लोगों का खाना बनता है। जोगेश्वरी एक कुशल मैनेंजर की तरह घर का खयाल रखती है।

प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु को मिश्र जी ने तीन विभागों में चित्रित किया है। पहला 'क्षेत्र' है जिसमें सन 1940-1950 तक की पारिवारिक स्थिति का वर्णन है। इसमें पाँच आँगनों वाला घर परिवार का खुशहाल जीवन देखने को मिलता है। 'दीवारें ' इस विभाग में 1960 से 1975 तक की पारिवारिक स्थिति है। राधेलाल का पारिवारिक जिम्मेदारियों को दुर्लक्षित करना परवार में अनाचार फैलाता है और परिवार में दीवारें उगने लगती हैं। इस विभाग में कथावस्तु का मध्य दिखायी देता है। तीसरे विभाग 'अन्धी गली' में सन् 1980 से 1990 तक की पारिवारिक स्थिति का दर्शन होता है जिसमें बदलते समय के साथ बदलती मानसिक स्थिति, नई पीढ़ि में बेबनाव, पाश्चात्यों का अनुकरण और संयुक्त परिवार का अंत होता दिखायी देता है। 1940 से लेकर 1990 तक के इस पचास सालों के काल का संयुक्त परिवार का पाँच पीढ़ियों का और धीरे-धीरे उसके बिखराव का मिश्र जी ने वास्तविक और यथार्थ चित्रण किया है।

मिश्र जी लिखित इस उपन्यास में चित्रात्मकता, भावात्मकता, आँचलिकता, संवेदनशीलता, सामाजिकता, राष्ट्रीयता और प्रासंगिकता नजर आती है। मनुष्य समाज के

पारिवारिक जीवन को समग्रता के साथ प्रस्तुत किया है। धर्म, परंपरा, संस्कृति, राष्ट्रप्रेम, पारिवारिक आस्था-अनास्था, विदेशी आकर्षण स्वतंत्र विचार शैली के कारण पारिवारिक जिम्मेदारी के प्रति दुर्लक्षित नई पीढ़ी आदि बातों की ओर सूक्ष्मता से ध्यान दिया है।

मेरे लघु शोध-प्रबंध का तिसरा अध्याय है - 'पाँच आँगनों वाला घर' का कथ्यगत अनुशीलन, जिसमें मैंने उपन्यास के कथ्य का विस्तार से विवेचन किया है। उपन्यास की रचना प्रक्रिया को कथन करना कथ्य है। कथन करने से वस्तु विन्यास विकसित होता है। घोर सामाजिक वास्तविकता को पुनर्निर्मित करने के लिए कथ्य में सजीवता होना आवश्यक बन जाता है। मिश्र जी का यह उपन्यास पारिवारिक यथार्थता को बताता है साथ ही में पारिवारिक ऐतिहासिकता को भी सहज सुंदर कथन से प्रकट करता है।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास की विशिष्टता कथ्य की सरलता, कथ्य की अभिव्यक्ति की विश्वसनियता और कथ्य की वास्तविकता उपन्यास को प्रतिबिंब की तरह प्रकट करती है। कथ्य की परख करते समय यह जानना आवश्यक है कि हम जीवन को कितना देख पाते हैं। उससे कितना अधिक उपन्यासकार देखता है। उसकी दृष्टि में कितनी गहराई है। कथ्यगत अनुशीलन करने के लिए कथ्य संबंधि सभी विचारों को उद्‌धृत किया है। कथ्य उपन्यास का प्राण है। उपन्यासकार की कथन करने की क्षमता का आधार होता है। कथन करते समय कथावस्तु को सजीव बनाना कथ्य की प्रमुखता होती है। कथावस्तु को कथन करने के लिए संवादों को ध्यान में लेना भी आवश्यक होता है। संवादों से कथ्य में सुंदरता और वास्तविकता आती है। कथ्य की दृष्टि से 'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास कथन की मिसाल को सहजता से प्रस्तुत करने में सफल हुआ है। इस अध्याय में मैंने कथ्य के अर्थ से लेकर कथ्य का सामर्थ्य, कथ्य की संवेदना, कथ्य की व्याप्ति, उपन्यास में कथ्य का बोध आदि प्रमुख बातों का विवेचन किया है। इसके बावजूद 'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास का प्रमुख कथ्य के अंतर्गत मोहभंग, छटपटाती नैतिकता, कथ्य की पूरकता, गौण कथ्य के अंतर्गत पात्रों के स्थानों को बताया है। कथ्य के परिवेश में प्राकृतिक परिवेश, पारिवारिक परिवेश, ऐतिहासिक परिवेश आदि का उल्लेख किया है।

कथ्य को कथन करने के लिए संवादों का महत्त्वपूर्ण आधार होता है। संवादों के कारण कथ्य और भी अधिक रोचक बनता है। कथावस्तु के आधार से ही कथ्य का विस्तार होता है। कथ्य में संवादों का जो स्थान है वह जीवन की सजीवता को दोहराता है। मनुष्य की रोजमर्रा की जिंदगी का परिचय देता है। इस उपन्यास के संवादों में पारिवारिक संवाद जो हैं उसका सजीव अंकन हुआ है। संवादों में राष्ट्रभाव, सुसंस्कार, आदर्श, वास्तविकता, स्वार्थ और नैतिकता आदि भाव नजर आते हैं।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में मिश्र जी का सहज चित्रण मनुष्य जीवन के प्रतिबिंब को दर्शाता है। मनुष्य जीवन की परख का अत्यंत प्रामाणिक रूप प्रदर्शित करता है।

चतुर्थ अध्याय में मैंने गोविन्द मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का शिल्पगत अनुशीलन किया है।

प्रस्तुत अध्याय में शिल्प संबंधीत विभिन्न रूपों का विवेचन किया है। शिल्प का उपन्यास में क्या स्थान होता है। शिल्प शब्द की उत्पत्ति के साथ-साथ शिल्प का अर्थ, शिल्प का स्वरूप, शिल्प की परिभाषा बतायी है। शिल्प ही रचना को सही आकार देता है। जिस प्रकार कोई कलाकार अपनी कलाकृति का निर्माण करने के लिए कलाकारी के उपकरणों को उपयोग में लाता है, उसी प्रकार साहित्य निर्माण के लिए शिल्प से संबंधित कई उपकरणों की आवश्यकता होती है। शैल्पिक सौंदर्य के कारण ही रचनाकार की कृति अधिक आकर्षक बन जाती है। लेखक के मन में सबसे प्रथम शिल्प का ही विचार आता है और उन्हीं विचारों से प्रेरणा लेकर वह अपने रचना शिल्प की निर्मिती के लिए जुटता रहता है। रचना सृष्टि को सही प्रविधि में बाँधना शिल्प है। रचना प्रक्रिया की विशिष्ट पद्धति ही शिल्प है। शिल्प के बिना उपन्यास को सही आकार प्राप्त नही हो सकता। शिल्प उपन्यास की जान होता है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का शिल्पगत अनुशीलन करने के लिए शिल्प का स्वरूप, अर्थ, परिभाषा के साथ-साथ इसका शैल्पिक विवेचन करना आवश्यक लगा है।

किसी कारागिर के भाँति उपन्यासकार अत्यंत कौशल्य के साथ उपन्यास की

निर्मिती करता है। शिल्पगत अनुशीलन करने के लिए मैंने उपन्यास तत्त्वों का आधार लेकर 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का शिल्पगत अनुशीलन किया है। इसमें मैंने कथावस्तु, पात्र, चरित्र चित्रण, देशकाल वातावरण, उद्देश्य आदि तत्वों के आधार पर उपन्यास को बताने का प्रयास किया है। उपन्यास में अलग-अलग भाषाओं के शब्द दिखायी देते हैं। हिंदी, विदेशी, अंग्रेजी, संस्कृत, तत्सम और तद्भव शब्दों का भी निरूपण हुआ है। मिश्र जी ने भाषा की सहजता के साथ शब्दों की प्रामाणिकता को भी अंत तक बरकरार रखा है। सहज सुंदर शब्दों का वर्णन यह मिश्र जी की एक खासियत है। उपन्यास में सभी तरह के वर्णन का मिश्रण है जैसे कई-कई जगह पर प्राकृतिक वर्णन, आँचलिक वर्णन, अलंकारिक वर्णन दिखायी देता है। उपन्यास में लोकोक्तियाँ, सुभाषित, मुहावरें आदि का भी प्रयोग हुआ है। साथ ही में यह उपन्यास संयुक्त परिवार की ऐतिहासिकता को प्रकट करता है।

मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस कलाकृति में सहज सुंदर शैली का प्रयोग हुआ है। उपन्यास की कथा पारिवारिक होकर भी समाज के सभी दायरों में आती है। इसमें विविध शैलियों की झलक देखने को मिलती है। जिसमें प्रमुख है वर्णनात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, ऐतिहासिक शैली, पत्रात्मक शैली। मिश्र जी के हाथों निर्माण यह वह कलाकृती है जिसको बनाने के लिए 50 सालों में बने हुए पारिवारिक अनबन को अपने मस्तिष्क में घुलना पड़ा है।

अत्यंत व्यस्तता होने के बावजूद घोर वास्तविकता का साहित्य बनाना अत्यंत कठीन बात है किंतु मिश्र जी के हाथों कई सुंदर साहित्यिक कलाकृतियाँ बनती गयी है। शिल्पगत अनुशीलन करने के लिए मिश्र जी से मिली सहायता उनके साहित्य से संबंधित ग्रंथों का उपयोग हुआ है।

मेरे लघु शोध-प्रबंध का आखरी अध्याय तथा पंचम अध्याय में मैंने 'पाँच आँगनों वाला घर' में चित्रित समस्याओं का विवेचन किया है।

मनुष्य का जीवन कई तरह की अनगिनत समस्याओं से भरा हुआ है। हर किसी को किसी न किसी समस्या से जूझना पड़ता ही है। जीवन समस्याओं से घिरा हुआ

होता है। स्वयं मिश्र जी भी इस बात को मानते हैं। उनके जीवन के शुरूआत में ही उन्हें समस्याओं ने घेर लिया था। पहले प्रेम की असफलता ने मनोवैज्ञानिक समस्या को उनके सामने खड़ा कर दिया। जीवन भर यही समस्या उन्हें सताती गई और उसी का सामना करने के लिए हर वक्त उन्होंने लेखन को अपना लिया। जीवन की इस कमी को उन्होंने आज भी अपने दिल में बसा लिया है। फिर भी जीवन चल पड़ा। उसी तरह मनुष्य को जीवन में आनेवाली सभी समस्याओं का समाधान ढूँढना पड़ता है। चाहे वह कोई भी समस्या हों। मनुष्य ने विज्ञान का आधार लेकर जितना भी विकास किया है, किंतु आधुनिक जीवचन शैली में रहते हुए नई-नई समस्याओं को खड़ा कर दिया है। आधुनिक जीवन शैली में तो नई-नई समस्याएँ अपना जोर पकड़ रही है।

आधुनिक जीवन शैलियों में जीवन जीने वाले मनुष्य को आज पहले से भी अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में चित्रित समस्याओं का विवेचन करते समय उपन्यास में आए हुए कठीन प्रसंगों का आधार लिया है। इस उपन्यास की कथावस्तु ही समस्याओं से भरी हुई है। पारिवारिक त्रासदी और पारिवारिक विघटन यही इस उपन्यास का प्रमुख विषय है। इसी कारण इसमें समस्याओं का भंडार ही है। उपन्यास के शुरू का दौर छोड़ दिया तो बाकी सारा उपन्यास पारिवारिक समस्याओं से घिरा हुआ है।

इसका विवेचन करने के लिए तथा इस उपन्यास की समस्याओं पर प्रकाश डालने के लिए मैंने विभिन्न समस्याओं में इसे समाविष्ट किया है किंतु फिर भी इस उपन्यास की प्रमुख समस्या है पारिवारिक समस्या। 'पाँच आँगनों वाला घर' में घटित हुए कई प्रसंगों के कारण कई समस्याओं का निर्माण हुआ है। जिसमें आर्थिक समस्या, राजनीतिक समस्या, मनोवैज्ञानिक समस्या, सामाजिक समस्या आदि प्रमुख हैं।

उपलब्धियाँ :

पूरे लघु शोध-प्रबंध के पश्चात् निम्नलिखित उपलब्धियाँ मेरे हाथ लगी हैं।

1) मिश्र जी के साहित्य में भारतीय समाज की वास्तविक अभिव्यक्ति दिखायी देती है। उपन्यास का विषय संयुक्त परिवार का विघटन और त्रासदी है।

2) उपन्यास के अंत में शोकांतिका ली गई है तथा यहाँ कथावस्तु समाप्त नहीं होती है बल्कि नई पीढ़ी की जैसे नई कहानी बनती है।

3) मिश्र जी अत्यंत संवेदनशील लेखक हैं, समाज के पारखी हैं और हर उस समस्या को अपने अंदर समाविष्ट करते हुए उसे चित्रित करते हैं।

4) उपन्यास घोर वास्तविकता को और मनुष्य जीवन की सच्चाई को बताता है।

5) मिश्र जी तटस्थ रहकर चित्रण करते हुए दिखायी देते हैं। किसी एक पक्ष को लेकर उसे बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत नहीं करते, जिससे सहज स्वाभाविक चित्रण हो जाता है।

अनुसंधान की दिशाएँ :

गोविन्द मिश्र जी के इसी उपन्यास पर निम्नलिखित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1) 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में चित्रित समाज जीवन।

2) उपन्यास में पारिवारिक जीवन।

3) 'पाँच आँगनों वाला घर' में चित्रित नारी पात्र।

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात् प्राप्त हुए हैं जिनपर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है। वस्तुतः हर विषय की कोई अपनी सीमाएँ होती हैं। यहाँ मेरे शोध विषय की भी सीमा है।

* * * *